संक्षिप्तिका

प्रस्तुत शोध का विषय ''हिन्दुस्तानी संगीत की उपशास्त्रीय बंदिशों में संगीत साहित्य समन्वय'' के अध्ययन के उद्देश्य से चयनित किया गया था –

हिन्दुस्तानी संगीत की उपशास्त्रीय विधाओं में संगीत साहित्य समन्वय का अध्ययन करना।

प्रथम अध्याय – हिन्दुस्तानी संगीत की गायन शैलियाँ – एक परिचय

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत संगीत की विधाओं के विषय में बताते हुए प्रथमतः शास्त्रीय गायन शैलियों के अन्तर्गत आने वाली विधाओं यथा – ध्रुपद, धमार, ख़्याल, तराना, सादरा, सरगम गीत एवं लक्षणगीत। द्वितीयतः उपशास्त्रीय गायन शैलियों के अर्न्तगत आने वाली विधाओं यथा – ठुमरी, टप्पा, दादरा, चैती, कजरी, होरी, बारहमासा का विस्तृत विवेचन किया गया है।

द्वितीय अध्याय – बंदिश एवं बंदिश का महत्व

इस अध्याय के अन्तर्गत बंदिश को परिभाषित करते हुए बंदिश के अर्थ पर प्रकाश डालते हुए बंदिश के सिद्धान्त, नियमों और बंदिश के महत्व एवं विशेषताओं पर गहन अध्ययन एवं विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय – उपशास्त्रीय बंदिशों में संगीत–साहित्य समन्वय – 1

तृतीय अध्याय में उपशास्त्रीय विधाओं के अन्तर्गत तीन विधाओं ठुमरी, टप्पा, दादरा का चयन कर विदुषी गिरिजा देवी, विदुषी शोभा गुर्टु, विदुषी लक्ष्मी शंकर, विदुषी, बेगम अख्तर आदि कलाकारों की बंदिशों का संकलन कर उसे स्वरलिपिबद्ध किया गया है तथा उन बंदिशों में संगीत–साहित्य समन्वय का अध्ययन किया गया है। निष्कर्षों को प्रमाणित एवं पुष्ट करने हेतु इन विधाओं के सुप्रसिद्ध कलाकार विदुषी गिरिजा देवी, विदुषी सविता देवी, विदुषी सुचारिता गुप्ता, प्रो० शारदा अभ्यंकर, पं० गुलशन भारती जैसे उच्चकोटि के स्थापित कलाकारों से साक्षात्कार कर उनके विचारों को भी सम्मिलित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय – ऋतुपरक उपशास्त्रीय बंदिशों में संगीत–साहित्य समन्वय – 2

शोध प्रंबध के चतुर्थ अध्याय में उपशास्त्रीय ऋतुपरक बंदिशों में चैती, कजरी, होरी, इन विधाओं को सम्मिलित किया गया है। विभिन्न कलाकारों विदुषी गिरिजा देवी, विदुषी शोभा

गुर्टु, पं० छन्नूलाल मिश्र, विदुषी निर्मला देवी आदि की बंदिशों को संकलित कर स्वरलिपिबद्ध किया गया है तथा भिन्न–भिन्न प्रस्तुति के अंशो के माध्यम से संगीत–साहित्य समन्वय पर प्रकाश डाला गया है एवं निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। इसके साथ ही निष्कर्षो की पुष्टि हेतु विभिन्न कलाकारों से साक्षात्कार लेकर उनके मंतव्य भी प्राप्त किये है।

पंचम अध्याय – समीक्षा

पंचम अध्याय के अर्न्तगत भिन्न–भिन्न घरानों जैसे ग्वालियर घराना, जयपुर घराना, बनारस घराना, लखनऊ घराना, भिंडीबाजार घराना आदि के कलाकार पं० राजेश्वर आचार्य, डा० सुषमा बाजपेयी, प्रो० विद्याधर मिश्र, पं० गुलशन भारती, विदुषी सुहासिनी कोरटकर, पं० केशव तलेगांवकर आदि से साक्षात्कार कर उनके विचारों को सम्मिलित किया गया है तथा बंदिशों पर विविध घरानों के प्रभाव को भी दर्शाया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर प्रमुख रूप से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. कुछ उपशास्त्रीय विधायें लोकसंगीत से उपजी है।
2. बंदिश के द्वारा ही संगीत विधाओं में नित नवीन दिशा का बोध होता है।
3. उपशास्त्रीय विधाओं में विविध प्रकार के स्वर–साहित्य संयोजन से विभिन्न रसों की निष्पत्ति होती है।
4. भिन्न–भिन्न उपशास्त्रीय विधाओं के अनुरूप रागों का चयन संभाव्य है।
5. साहित्य रस के अनुरूप प्रस्तुति के मध्य भी रागों में परिवर्तन होता है।
6. अधिकतर चंचल प्रकृति की तालों का प्रयोग होता है। जैसे – दीपचंदी, कहरवा, दादरा आदि।
7. इसी प्रकार रागों में भी चंचल प्रकृति के रागों का प्रयोग होता है।
8. ऋतुपरक उपशास्त्रीय विधाओं में ऋतु के अनुसार स्वर एवं शब्दों का चयन होता है तथा उनके अनुरूप ही रस निष्पादन होता है।
9. भिन्न–भिन्न बंदिशों पर भिन्न–भिन्न घरानों की विशेषताओं का प्रभाव होता है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध शोध के क्षेत्र में –

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध शोधार्थियों एवं संगीत प्रेमियों के लिए अत्यन्त लाभप्रद रहेगा।